Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लक्ष्मी-नारायणहृदयस्तोत्रम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

omain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

nain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Fundir

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

शिव' ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्क—८

अथर्वणरहस्योत्तरभागस्थं

लक्ष्मी-नारायण-हृदयम्

(लक्ष्मीलहरि-कनकधारास्तोत्र-श्रीसूक्त-लक्ष्मीसूक्त-
लक्ष्मीकवचादिस्तोत्र-समन्वितम्)

भाषाटीकासहितम्

•

सम्पादक तथा टीकाकार :
व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर-
आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री

•

प्रकाशक :
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

संवत् २०५५] [मूल्य : १०.००

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

पूजा-पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए
नाथ पुस्तक भण्डार
194, दरीबा कलां, दिल्ली- 6, दूरभाष : 23275344

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी–२२१००१

फोन : ३९२५४३, ३९३५३८

•

सम्पादक :

आचार्य पं० शिवदत्त मिश्र शास्त्री

•

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण : १९९८ ई०

•

मुद्रक :

भारत प्रेस

कचौड़ीगली, वाराणसी–१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक अथर्वणरहस्योत्तरभाग से निकाल कर 'लक्ष्मी-नारायण-हृदय' के नाम से पृथक् प्रकाशित किया गया है। यह लक्ष्मी-उपासना के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी पुस्तक है। इसके स्तोत्र-पाठ एवं अनुष्ठान द्वारा अर्थ-धन-प्राप्ति अवश्यम्भावी है।

नारायण-हृदय का पाठ सभी इच्छित फलों को प्रदान करनेवाला है। किन्तु लक्ष्मी-हृदय-स्तोत्र-पाठ के साथ नारायण-हृदय का पाठ भी अवश्य करना चाहिए। यह लक्ष्मी-हृदय और नारायण-हृदय का सम्पुटित पाठ (जो पुस्तक में स-विधि लिखा गया है) जो व्यक्ति श्रद्धा-भक्ति पूर्वक नित्यप्रति करता है, उसकी सभी कामनाएँ अवश्य पूर्ण होती हैं।

अन्त में, 'श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी' के संचालक महोदय विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन कर लक्ष्मी-उपासना-प्रेमी पाठकों का महान् उपकार किया है।

गङ्गादशहरा
४ जून, १९९८ ई.
वाराणसी-१

—शिवदत्त मिश्र शास्त्री
सी० के० ५/२६ ए. भिखारीदास लेन
ठठेरी बाजार, वाराणसी—१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

ध्यानम्

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम्।
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधानाम्
आद्यां शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम्॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

आचार्य–पण्डितश्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिसंस्कृतं

लक्ष्मीनारायणहृदयम्

'शिवदत्ती' भाषाटीकासहितम्

•

पाठविधिः माहात्म्यं च

नारायणस्य हृदयं सर्वाऽभीष्टफलप्रदम् ।
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं यदि चैतद् विना कृतम् ॥ १ ॥

• शिवदत्ती •

लक्ष्मीहृदय और नारायणहृदय की पाठविधि एवं माहात्म्य—

नारायणहृदय का पाठ सभी अभीष्ट (इच्छित) फलों को देनेवाला है। किन्तु यदि लक्ष्मीहृदय स्तोत्र के साथ न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

lic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं लक्ष्मीः क्रुध्यति सर्वदा।
एतत् सङ्कलितं स्तोत्रं सर्वकामफलप्रदम ॥ २॥
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं तथा नारायणात्मकम्।
जपेद् यः सङ्कलीकृत्य सर्वाऽभीष्टमवाप्नुयात् ॥ ३॥
नारायणस्य हृदयमादौ जप्त्वा ततः परम्।
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं जपेन्नारायणं पुनः ॥ ४॥

करे तो नारायणहृदयका पाठ निष्फल अर्थात् व्यर्थ कहा गया है, और लक्ष्मी हमेशाके लिए उस साधक से क्रुद्ध हो जाती हैं। यह संकलित (सम्पुटित) स्तोत्र समस्त कामनाओं को देनेवाला है ॥१—२॥ लक्ष्मीहृदय स्तोत्र तथा नारायणहृदय स्तोत्र का पाठ जो व्यक्ति सम्पुटित करके करता है, वह अपने सभी इच्छित फलों को प्राप्त करता है ॥ ३॥ पहले नारायणहृदयका पाठ कर तदनन्तर लक्ष्मीहृदयस्तोत्र का पाठ करे, फिर नारायणहृदय का ॥ ४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पुनर्नारायणं जप्त्वा पुनर्लक्ष्मीकृतं जपेत्।
सर्वमध्ये द्विवारेण जपेत् सङ्कलितं हि तत्॥५॥
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं सर्वमन्त्रप्रकाशितम्।
तद्वज्जपादिकं कुर्यादेतत् सङ्कलितं शुभम्॥६॥

पुनः नारायणहृदयका पाठ कर पश्चात् लक्ष्मीहृदयका पाठ करे। फिर लक्ष्मीहृदय स्तोत्र का दो बार पाठ करे अर्थात् सर्वप्रथम नारायणहृदय का एक श्लोक पढ़कर पुनः लक्ष्मीहृदय का एक श्लोक पढ़े फिर नारायण हृदय का एक श्लोक पढ़कर लक्ष्मीहृदय का एक श्लोक पढ़े, पुनः नारायणहृदय का एक श्लोक उच्चारण कर लक्ष्मीहृदयका श्लोक दो बार पढ़े– इसी को संकलित पाठ कहते हैं ॥५॥

सब मन्त्रों को प्रकाशित करने वाले लक्ष्मीहृदय के सम्पुटित पाठ को कहा गया तदनुसार जो पाठक जप-पाठ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सर्वकाममवाप्नोति आधि-व्याधिभयं हरेत्।
गोप्यमेतत् सदा कुर्यान्न सर्वत्र प्रकाशयेत्॥ ७॥
इति गुह्यतमं शास्त्रं प्रोक्तं ब्रह्मादिकैः पुरा।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन गोपयेत् साधयेत् सुधीः॥ ८॥

आदि करेगा वह अपने समस्त अभीष्ट फलों को प्राप्त करेगा और बीज मन्त्र का जप इसी नियम के अनुसार करने से सिद्धि प्राप्त होगी। इसको ही संकलित शुभफल सूचक समझना चाहिए ॥ ६॥

इस लक्ष्मी-नारायणहृदय के पाठसे पाठक अपनी सभी कामनाएँ प्राप्त करता है आर आधि (ज्वर), व्याधि (फोड़ा-फुन्सी) आदि रोगों के भय से छूट जाता है। इसको सदा गुप्त रखना चाहिए। और जिस-किसी से भी सब जगह इसे नहीं कहना चाहिए ॥ ७॥ यह अत्यन्त गुप्त शास्त्र है, इसे प्राचीन काल में ब्रह्मादिकों ने कहा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

यत्रैतत् पुस्तकं तिष्ठेल्लक्ष्मीनारायणात्मकम्।
भूत-प्रेत-पिशाचांश्च वेतालान्नाशयेत् सदा॥ ९॥
लक्ष्मीहृदयकं प्रोक्तं विधिना साधयेत् सुधीः।
भृगुवारे च रात्रौ तु पूजयेत् पुस्तकद्वयम्॥ १०॥
सर्वथा सर्वदा सत्यं गोपयेत् साधयेत् सुधीः।
गोपनात् साधनाल्लोके धन्यो भवति तत्त्वतः॥ ११॥

इसलिए सब तरह से इसे गोपनीय रखकर ही विद्वान् पुरुष इसकी साधना करे ॥ ८॥

जहाँ पर यह लक्ष्मी नारायणहृदय की पुस्तक रहती है, वहाँ पर हमेशा के लिए भूत, प्रेत, पिशाच और बैतालों को नष्ट कर देती है ॥ ९॥ लक्ष्मीहृदय की साधना विद्वान् पूर्वोक्त विधि से करे। शुक्रवार की रात्रि में दोनों पुस्तकोंका पूजन करे ॥ १०॥

इसे सर्वथा सत्य मानकर विद्वान् पुरुष गुप्त रीति से इसकी साधना करे। गुप्त रूप से साधना करनेवाला साधक इस संसार में निश्चय धन्य-अर्थात् प्रशंसनीय होता है ॥ ११॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

लक्ष्मीहृदयस्तोत्रम्

आचम्य, प्राणानायम्य। देशकालौ सङ्कीर्त्य, 'श्रीलक्ष्मीनारायणप्रसादेन ममाऽभीष्टकामना-सिद्ध्यर्थम् अद्यप्रभृत्यमुकदिनपर्यन्तं सङ्करीकरण-रीत्या सम्पुटीकरणरीत्या पुरश्चरणरीत्या सकृदा-वर्तनपाठरीत्या वा लक्ष्मीनारायणहृदयजपाख्यं कर्म करिष्ये' इति सङ्कल्प्य, न्यासादि कुर्यात् ।

'ॐ केशवाय नमः', 'ॐ नारायणाय नमः', 'ॐ माधवाय नमः' पढ़कर तीन बार आचमन तथा प्राणायाम करे। पश्चात् दाहिने हाथ में जल और अक्षत लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य' से 'लक्ष्मीनारायणहृदय-जपाख्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

विनियोग:

अस्य श्रीमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गव- ऋषिः, आद्यादि-श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, अनुष्टुबादि- नानाछन्दासि, श्रीर्बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास:

ॐ भार्गवऋषये नमः, शिरसि। अनुष्टुबादि नानाछन्दोभ्यो नमो, मुखे। आद्यादि-श्रीमहालक्ष्म्यै देवताय

कर्म करिष्ये' तक पढ़कर जप का संकल्प करे। तदनन्तर न्यास आदि करे।

विनियोग—हाथ में जल लेकर, 'अस्य श्रीमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य, से आरम्भ कर 'जपे विनियोगः' तक मन्त्र पढ़कर भूमि पर जल छोड़े।

ऋष्यादि न्यास— 'ॐ भार्गवऋषये नमः' इस मन्त्र से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

नमो, हृदये। श्रीं बीजाय नमो गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। ऐं कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे।

करन्यासः

ॐ श्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रीं अनामिकाभ्या

शिरका स्पर्श करे। 'अनुष्टुबादिनानाछन्दोभ्यो नमः' पढ़कर मुख को छुए। 'आद्यादिश्रीमहालक्ष्म्यै देवतायै नमः' से हृदय का स्पर्श करे। 'श्रीं बीजाय नमः' से गुप्तांग का स्पर्श करे। 'ह्रीं शक्तये नमः' से दोनों पैरों का स्पर्श करे। 'ऐं कीलकाय नमः' मन्त्र से सभी अंग का स्पर्श करे।

करन्यास—'ॐ श्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' से दोनों हाथ की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों को स्पर्श करे। 'ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः' यह मन्त्र पढ़कर दोनों हाथ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

नमः। ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास:

ॐ श्रीं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।

के अँगूठों से दोनों तर्जनी अँगुलियों को छुए। 'ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः' से दोनों हाथ के अँगूठे से मध्यमा अँगुलियों को स्पर्श करे। 'ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः' मन्त्र पढ़कर दोनों हाथ की अनामिका अँगुलियों को स्पर्श करे। 'ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः' से दोनों हाथ की कानी अँगुलियों को छुए और 'ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः' से दोनों हथेलियों तथा उनके पिछले भागों का परस्पर स्पर्श करे।

हृदयादिन्यास—'ॐ श्रीं हृदयाय नमः' से हृदय का स्पर्श करे। 'ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा' मन्त्र पढ़कर शिर को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

ॐ ऐं शिखायै वषट् । ॐ श्रीं कवचाय हुम् ।
ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ऐं अस्त्राय फट् ।

दिग्बन्धः

'ॐ श्रीं ह्रीं ऐं' इति दिग्बन्धः ।

ध्यानम्

हस्तद्वयेन कमले धारयन्तीं स्वलीलया ।
हार-नूपुर-संयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तये ॥

छुए। 'ॐ ऐं शिखायै वषट् से शिखा का स्पर्श करे। 'ॐ श्रीं कवचाय हुम्' से दाहिने हाथ से बाँयें कन्धे और बाँयें हाथ से दाहिने कन्धे का स्पर्श करे। 'ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्' से दोनों नेत्रों का स्पर्श करे। 'ॐ ऐं अस्त्राय फट्' मन्त्र पढ़कर दोनों हाथ के अँगूठे को चिटका दे।

दिग्बन्धन—'ॐ श्रीं ह्रीं ऐं' पढ़कर दिग्बन्धन करे।

ध्यान—'हस्तद्वयेन कमले-' से 'विचिन्तये' तक महालक्ष्मी के ध्यानका श्लोक पढ़कर महालक्ष्मीका ध्यान करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

इति ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य,

शङ्ख-चक्र-गदाहस्ते शुभ्रवर्णे ! सुवासिनि !।
मम देहि वरं लक्ष्मि ! सर्वसिद्धिप्रदायिनि ॥

इति सम्प्रार्थ्य, 'ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा'। इति मन्त्रं जप्त्वा, पुनः पूर्ववद् हृदयादि-षडङ्गन्यासं कृत्वा स्तोत्रं पठेत्।

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचार से महालक्ष्मी की पूजा कर, 'शङ्ख-चक्र-गदाहस्ते०' श्लोक पढ़कर महालक्ष्मी की प्रार्थना करे।

पश्चात् 'ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा' इस मन्त्र का जप करे, और फिर पहले की तरह हृदयादि षडङ्गन्यास कर 'वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं' (श्लोक १) से लेकर 'कुरु मे गृहे श्रीः' (श्लोक १०६) तक लक्ष्मी हृदय का पाठ करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

स्तोत्रम्

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम् ।
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधानाम्
आद्यां शक्तिं शकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम् ॥ १॥
श्रीमत्सौभाग्य-जननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम् ।
सर्वकाम-फलावाप्ति-साधनैक-सुखावहाम् ॥ २॥
स्मरामि नित्यं देवेशि ! त्वया प्रेरितमानसः ।
त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीम् ॥ ३॥
समस्त-सम्पत्-सुखदां महाश्रियं
समस्त-सौभाग्यकरीं महाश्रियम् ।
समस्त-कल्याणकरीं महाश्रियं
भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम् ॥ ४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

lic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

विज्ञानसम्पत्सुखदां सनातनीं
विचित्र-वाग्भूतिकरीं मनोहराम् ।
अनन्त-सम्मोद-सुखप्रदायिनीं
नमाम्यहं भूतिकरीं हरिप्रियाम् ॥५॥
समस्त-भूतान्तर-संस्थिता त्वं
समस्त - भोक्त्रीश्वरि ! विश्वरूपे ! ।
तन्नास्ति यत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तु
त्वत्पादपद्मं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥६॥
दारिद्र्य-दुःखौघ-तमोपहन्त्रि !
त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ।
दीनार्ति-विच्छेदन-हेतुभूतैः
कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः ॥७॥
अम्ब ! प्रसीद करुणा-सुधयाऽऽर्द्रदृष्ट्या
मां त्वत्कृपाद्रविणगेहमिमं कुरुष्व ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

आलोकय प्रणत-हृद्गत-शोकहन्त्रि !
त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥ ८॥
शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणाय
कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै ।
क्षान्त्यै नमोऽस्तु दुरित-क्षयकारणायै
धात्र्यै नमोऽस्तु धन-धान्य-समृद्धिदायै ॥ ९॥
शक्त्यै नमोऽस्तु शशिशेखरसंस्तुतायै
रत्यै नमोऽस्तु रजनीकरसोदरायै ।
भक्त्यै नमोऽस्तु भवसागरतारिकायै
मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदनवल्लभायै ॥ १०॥
लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभलक्षणलक्षितायै
सिद्ध्यै नमोऽस्तु शिवसिद्धसुपूजितायै ।
धृत्यै नमोऽस्त्वमितदुर्गतिभञ्जनायै
गत्यै नमोऽस्तु वरसद्गतिदायिकायै ॥ ११॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

देव्यै नमोऽस्तु दिवि देवगणार्चितायै
भूत्यै नमोऽस्तु भुवनार्तिविनाशनायै।
दात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधरवल्लभायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥१२॥
सुतीव्र-दारिद्र्य-विदुःखहन्त्र्यै
नमोऽस्तु ते सर्वभयापहन्त्र्यै।
श्रीविष्णु-वक्षःस्थल-संस्थितायै
नमो नमः सर्वविभूतिदायै ॥१३॥
जयतु जयतु लक्ष्मीर्लक्षणालङ्कृताङ्गी
जयतु जयतु पद्मा पद्मसद्माभिवन्द्या।
जयतु जयतु विद्या विष्णुवामाङ्कसंस्था
जयतु जयतु सम्यक् सर्वसम्पत्करी श्रीः ॥१४॥
जयतु जयतु देवी देवसङ्घाभिपूज्या
जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्यरूपा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

जयतु जयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या
जयतु जयतु सत्या सर्वभूतान्तरस्था ॥१५॥
जयतु जयतु रम्या रत्नगर्भान्तरस्था
जयतु जयतु शुद्धा शुद्धजाम्बूनदाभा।
जयतु जयतु कान्ता कान्तिमद्भासिताङ्गी
जयतु जयतु कान्ता शीघ्रमागच्छ सौम्ये!॥१६॥
यस्याः कलाद्याः कमलोद्भवाद्याः
रुद्राश्च शक्रप्रमुखाश्च देवाः ।
जीवन्ति सर्वा अपि शक्तयस्ताः
प्रभुत्वमाप्ताः परमायुषस्ते ॥१७॥
लिलेख निटिले विधिर्मम लिपिं विसृज्यान्तरं
त्वया विलिखितव्यमेतदिति तत्फलप्राप्तये।
तदन्तरफले स्फुटं कमलवासिनि श्रीरिमां
समर्पय समुद्रिकां समलभाग्यसंसूचिकाम्॥१८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

कलया ते यथा देवी जीवन्ति सचराऽचराः।
तथा सम्पत्करी लक्ष्मीः सर्वदा सम्प्रसीद मे॥१९॥
यथा विष्णुर्ध्रुवो नित्यं स्वकलां सन्निवेशयत्।
तथैव स्वकलां लक्ष्मि ! मयि सम्यक् समर्पय॥२०॥
सर्वसौख्यप्रदे देवि ! भक्तानामभयप्रदे।
अचलां कुरु यत्नेन कलां मयि निवेशिताम्॥२१॥
मुदास्तां मद्भाले परमपदलक्ष्मीः स्फुटकला
सदा वैकुण्ठश्रीर्निवसतु कला मे नयनयोः।
वसेत् सत्ये लोके मम वचसि लक्ष्मीर्वरकला
श्रियः श्वेतद्वीपे निवसतु कला मेऽस्तु करयोः॥२२॥
तावन्नित्यं ममाऽङ्गेषु क्षीराब्धौ श्रीकला वसेत्।
सूर्याचन्द्रमसौ यावद्यावल्लक्ष्मीपतिः श्रिया॥२३॥
सर्वमङ्गलसम्पूर्णा सर्वैश्वर्य-समन्विता।
आद्यादिश्रीमहालक्ष्मीस्त्वत्कला मयि तिष्ठतु॥२४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

अज्ञानतिमिरं हन्तुं शुद्धज्ञानप्रकाशिका।
सर्वैश्वर्यप्रदा मेऽस्तु त्वत्कला मयि संस्थिता॥ २५॥
अलक्ष्मीं हरतु क्षिप्रं तमःसूर्यप्रभा यथा।
वितनोतु मम श्रेयस्त्वत्कला मयि संस्थिता॥ २६॥
ऐश्वर्य—मङ्गलोत्पत्तिस्त्वत्कलायां निधीयते।
अहं तस्मात्कृतार्थोऽस्मि पात्रमध्यस्थिते त्वयि॥ २७॥
भवदावेश-भाग्योऽहं भाग्यवानस्मि भार्गवि।
त्वत्प्रसादात्पवित्रोऽहं लोकमातर्नमोऽस्तु ते॥ २८॥
पुनासि मां त्वं कलयैव यस्मा-
दतः समागच्छ ममाऽग्रतस्त्वम्।
परं पदं श्रीर्भव सुप्रसन्ना
मय्यच्युतेन प्रविशादिलक्ष्मीः॥ २९॥
श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मीः समागच्छ ममाऽग्रतः।
नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्या विलोकय॥ ३०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सत्यलोकस्थिते लक्ष्मीस्त्वं ममाऽऽगच्छ सन्निधिम्।
वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव॥ ३१॥
श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मी: शीघ्रमागच्छ सुव्रते।
विष्णुना सहिते देवि ! जगन्मात: प्रसीद मे॥ ३२॥
क्षीराम्बुधिस्थिते लक्ष्मी: समागच्छ स-माधवे।
त्वत्कृपादृष्टिसुधया सततं मां विलोकय॥ ३३॥
रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि ! परिपूर्णहिरण्मयि।
समागच्छ समागच्छ स्थित्वाऽऽशु पुरतो मम॥ ३४॥
स्थिरा भव महालक्ष्मीर्निश्चला भव निर्मले।
प्रसन्ने कमले देवि ! प्रसन्नहृदया भव॥ ३५॥
श्रीधरे ! श्रीमहाभूते ! त्वदन्त:स्थं महानिधिम्।
शीघ्रमुद्धृत्य पुरत: प्रदर्शय समर्पय॥ ३६॥
वसुन्धरे ! श्रीवसुधे ! वसुदोग्ध्रि ! कृपां मयि।
त्वत्कुक्षिगतसर्वस्वं शीघ्रं मे सम्प्रदर्शय॥ ३७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

विष्णुप्रिये ! रत्नगर्भे ! समस्तफलदे ! शिवे।
त्वद्गर्भगतहेमादीन् सम्प्रदर्शय दर्शय।। ३८।।
रसातलगते लक्ष्मीः शीघ्रमागच्छ मे पुरः।
न जाने परमं रूपं मातर्मे सम्प्रदर्शय।। ३९।।
आविर्भव मनोवेगाच्छीघ्रमागच्छ मे पुरः।
मां वत्स ! भैरिहेत्युक्त्वा कामं गौरिव रक्ष माम्।। ४०।।
देवि ! शीघ्रं समागच्छ धरणीगर्भसंस्थिते।
मातस्त्वद्भृत्यभृत्योऽहं मृगये त्वां कुतूहलात्।। ४१।।
उत्तिष्ठ जागृहि त्वं मे समुत्तिष्ठ सुजागृहि।
अक्षयान् हेमकलशान् सुवर्णेन सुपूरितान्।। ४२।।
निक्षेपान्मे समाकृष्य समुद्धृत्य ममाऽग्रतः।
समुन्नतानना भूत्वा समाधेहि धरान्तरात्।। ४३।।
मत्सन्निधिं समागच्छ मदाहितकृपारसात्।
प्रसीद श्रेयसां दोग्ध्रि ! लक्ष्मीर्मे नयनाग्रतः।। ४४।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

अत्रोपविश लक्ष्मीस्त्वं स्थिरा भव हिरण्मयि।
सुस्थिरा भव सम्प्रीत्या प्रसीद वरदा भव॥४५॥
आनीय त्वं तथा देवि ! निधीन्मे सम्प्रदर्शय।
अद्य क्षणेन सहसा दत्वा संरक्ष मां सदा॥४६॥
मयि तिष्ठ तथा नित्यं यथेन्द्रादिषु तिष्ठसि।
अभयं कुरु मे देवि ! महालक्ष्मीर्नमोऽस्तु ते॥४७॥
समागच्छ महालक्ष्मीः शुद्धजाम्बूनदप्रभे।
प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय॥४८॥
लक्ष्मीर्भुवं गता भासि यत्र यत्र हिरण्मयी।
तत्र तत्र स्थिता त्वं मे तव रूपं प्रदर्शय॥४९॥
क्रीडसे बहुधा भूमौ परिपूर्णा हिरण्मयी।
मम मूर्धनि ते हस्तमविलम्बितमर्पय॥५०॥
फलद्भाग्योदये लक्ष्मीः समस्त-पुरवासिनि !।
प्रसीद मे महालक्ष्मीः परिपूर्णमनोरथे !॥५१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अयोध्यादिषु सर्वेषु नगरेषु समास्थिते।
वैभवैर्विविधैर्युक्ता समागच्छ बलान्विते ॥ ५२ ॥
समागच्छ समागच्छ ममाऽग्रे भव सुस्थिरा।
करुणारस-निष्यन्द-नेत्रद्वय-विलासिनि ॥ ५३ ॥
संविधत्स्व महालक्ष्मीस्त्वत्पाणिं मम मस्तके।
करुणासुधया मां त्वमभिषिञ्च स्थिरीकुरु ॥ ५४ ॥
सर्वराजगृहे लक्ष्मीः समागच्छ मुदान्विते।
स्थित्वाऽऽशु पुरतो मेऽद्य प्रसादेनाऽभयं कुरु ॥ ५५ ॥
सादरं मस्तके हस्तं मम त्वं कृपयाऽर्पय।
सर्वराजगृहे लक्ष्मीस्त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥ ५६ ॥
आद्यादि-श्रीमहालक्ष्मीर्विष्णुवामाङ्कसंस्थिते !।
प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं रक्ष मां शरणागतम् ॥ ५७ ॥
प्रसीद मे महालक्ष्मीः सुप्रसीद महाशिवे!।
अचला भव सम्प्रीत्या सुस्थिरा भव मद्गृहे ॥ ५८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

यावत्तिष्ठन्ति वेदाश्च यावत्त्वन्नाम तिष्ठति।
यावद्विष्णुश्च यावत्त्वं तावत्कुरु कृपां मयि ।। ५९ ।।
चान्द्री कला यथा शुक्ले वर्धते सा दिने दिने।
तथा दया ते मय्येव वर्धतामभिवर्धताम् ।। ६० ।।
यथा वैकुण्ठनगरे यथा वै क्षीरसागरे।
यथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह ।। ६१ ।।
योगिनां हृदये नित्यं यथा तिष्ठसि विष्णुना।
तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह ।। ६२ ।।
नारायणस्य हृदये भवती यथाऽऽस्ते
नारायणोऽपि तव हृत्कमले यथाऽऽस्ते ।
नारायणस्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव
तौ तिष्ठतां हृदि ममाऽपि दयावति श्रीः ।। ६३ ।।
विज्ञानवृद्धिं हृदये कुरु श्रीः
सौभाग्यवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

दयासु वृद्धिं कुरुतां मयि श्रीः
सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ॥६४॥
न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लि
सद्भक्तचिन्तामणि-कामधेनो ।
विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना
गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे ॥६५॥
आद्यादिमाये ! त्वमजाण्डबीजं
त्वमेव साकारनिराकृतिस्त्वम् ।
त्वया धृताश्चाऽब्जभवाण्डसङ्घा-
श्चित्रं चरित्रं तव देवि ! विष्णोः ॥६६॥
ब्रह्मरुद्रादयो देवा वेदाश्चापि न शक्नुयुः ।
महिमानं तव स्तोतुं मन्दोऽहं शक्नुयां कथम् ॥६७॥
अम्ब ! त्वद्वत्सवाक्यानि सूक्ताऽसूक्तानि यानि च ।
तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम् ॥६८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

भवतीं शरणं गत्वा कृतार्थाः स्युः पुरातनाः।
इति सञ्चिन्त्य मनसा त्वामहं शरणं व्रजे ॥६९॥
अनन्ता नित्यसुखिनस्त्वद्भक्तास्त्वत्परायणाः।
इति वेदप्रमाणाद्धि देवि ! त्वां शरणं व्रजे ॥७०॥
तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यन्त्विति वै क्वचित्।
इति सञ्चिन्त्यसञ्चिन्त्यप्राणान्संधारयाम्यहम् ॥७१॥
त्वदधीनस्त्वहं मातस्त्वत्कृपा मयि विद्यते।
यावत् सम्पूर्णकामः स्यां तावद्देहि दयानिधे ! ॥७२॥
क्षणमात्रं न सक्नोमि जीवितुं त्वत्कृपां विना।
न जीवन्तीह जलजा जलं त्यक्त्वा जलग्रहाः ॥७३॥
यथा हि पुत्रवात्सल्याज्जननी प्रस्नुतस्तनी।
वत्सं त्वरितमागत्य संप्रीणयति वत्सला ॥७४॥
यदि स्यां तव पुत्रोऽहं माता त्वं यदि मामकी।
दयापयोधरस्तन्य-सुधाभिरभिषिञ्च माम् ॥७५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

मृग्यो न गुणलेशोऽपि मयि दोषैकमन्दिरे।
पांसूनां वृष्टिविन्दूनां दोषाणां च न मे मितिः॥ ७६॥
पापिनामहमेवाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणीः।
दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये॥ ७७॥
विधिनाऽहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता।
आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः॥ ७८॥
कृपा मदग्रजा किं ते अहं किं वा तदग्रजः।
विचार्य देहि मे वित्तं तव देवि ! दयानिधे !॥ ७९॥
माता पिता त्वं गुरु-सद्गतिः श्रीः
त्वमेव संजीवनहेतुभूता।
अन्यन्न मन्ये जगदेकनाथे !
त्वमेव सर्वं मम देवि ! सत्ये ॥८०॥
आद्यादि लक्ष्मीर्भव सुप्रसन्ना
विशुद्ध - विज्ञान - सुखैकदोग्ध्री ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अज्ञानहन्त्री त्रिगुणातिरिक्ता
प्रज्ञाननेत्रा भव सुप्रसन्ना ।। ८१ ।।
अशेष-वाग्जाड्य-मलापहन्त्री
नवं नवं स्पष्टसुवाक्प्रदायिनी ।
ममेह जिह्वाग्र-सुरङ्ग-नर्तकी
भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः।। ८२।।
समस्तसम्पत्सु विराजमाना
समस्ततेजश्च विभासमाना ।
विष्णुप्रिये ! त्वं भव दीप्यमाना
वाग्देवता मे वदने प्रसन्ना ।। ८३ ।।
सर्वार्थदा सर्वजगत्प्रसूतिः
सर्वेश्वरी सर्वभयापहन्त्री ।
सर्वोन्नता त्वं सुमुखी भव श्री-
र्हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना।। ८४।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सर्वप्रदर्शे सकलार्थदे त्वं
प्रभासु लावण्यदयाप्रदोग्ध्री ।
सुवर्णदे त्वं सुमुखी भव श्री-
र्हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना ॥८५॥
समस्त-विघ्नौघ-विनाश-कारिणी
समस्तभक्तोद्धरणे विचक्षणा ।
अनन्त-सौभाग्य-सुखप्रदायिनी
हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना ॥८६॥
देवि ! प्रसीद दयनीयतमाय मह्यं
देवाधिनाथ-भवदेव-गणाभिवन्द्ये ।
मातस्तथैव भव सन्निहिता दृशोर्मे
प्रीत्या समं मम मुखे भव सुप्रसन्ना ॥८७॥
मां वत्स भैरभयदानकरोऽर्पितस्ते
मौलौ ममेति मयि दीनदयानुकम्पे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मातः ! समर्पय मुदा करुणाकटाक्षं
माङ्गल्यबीजमिह नः सृज जन्म मातः !॥८८॥
कटाक्ष इह कामधुक् तव मनस्तु चिन्तामणिः
करः सुरतरुः सदा नवनिधिस्त्वमेवेन्दिरे।
भवेत्तव दयारसो मम रसायनं चाऽन्वहं
मुखं तव कलानिधिर्विविधवांछितार्थप्रदम्॥८९॥
यथा रसस्पर्शनतोऽयसोऽपि
सुवर्णता स्यात् कमले तथा ते।
कटाक्षसंस्पर्शनतो जनाना-
ममङ्गलानामपि मङ्गलत्वम् ॥९०॥
देहाति नास्तीति वचःप्रवेशाद्
भीतो रमे ! त्वां शरणं प्रपद्ये।
अतः सदाऽस्मिन्नभयप्रदा त्वं
सहैव पत्या मयि सन्निधेहि ॥९१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

कल्पद्रुमेण मणिना सहिता सुरम्या
श्रीस्ते कला मयि रसेन रसायनेन ।
आस्तां यतो मम च दृक्शिरपाणिपाद-
स्पृष्टाः सुवर्णवपुषः स्थिरजङ्गमाः स्युः ॥ ९२॥

आद्यादि-विष्णोः स्थिरधर्मपत्नी
त्वमेव पत्या मयि सन्निधेहि ।
आद्यादि-लक्ष्मि ! त्वदनुग्रहेण
पदे पदे मे निधिदर्शनं स्यात् ॥ ९३॥

आद्यादि-लक्ष्मीहृदयं पठेद् यः
स राज्यलक्ष्मीमचलां तनोति ।
महादरिद्रोऽपि भवेद्धनाढ्य-
स्तदन्वये श्रीः स्थिरतां प्रयाति ॥ ९४॥

यस्य स्मरणमात्रेण तुष्टा स्याद्विष्णुवल्लभा ।
तस्याऽभीष्टं ददात्याशु तं पालयति पुत्रवत् ॥ ९५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

इदं रहस्यं हृदयं सर्वकाम-फलप्रदम् ।
जपः पञ्चसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते ।। ९६ ।।
त्रिकालमेककालं वा नरो भक्तिसमन्वितः ।
यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि स याति परमां श्रियम् ।। ९७ ।।
महालक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे ।
इदं श्रीहृदयं जप्त्वा पञ्चवारं धनी भवेत् ।। ९८ ।।
अनेन हृदयेनाऽन्न गर्भिण्या अभिमन्त्रितम् ।
ददाति तत्कुले पुत्रो जायते श्रीपतिः स्वयम् ।। ९९ ।।
नरेण वाऽथवा नार्या लक्ष्मीहृदयमन्त्रिते ।
जले पीते च तद्वंशे मन्दभाग्यो न जायते ।।१००।।
य आश्विने मासि च शुक्लपक्षे
रमोत्सवे सन्निहितैकभक्त्या ।
पठेत्तथैकोत्तरवारवृद्ध्या
लभेत् स सौवर्णमयीं सुवृष्टिम् ।।१०१।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

य एकभक्तोऽन्वहमेकवर्षे
विशुद्धधीः सप्ततिवारजापी ।
स मन्दभाग्योऽपि रमाकटाक्षाद्
भवेत् सहस्राक्ष-शताधिक-श्रीः ॥१०२॥

श्रीशार्ङ्गिभक्तिं हरिदासदास्यं
प्रपन्नमन्त्रार्थ-दृढैकनिष्ठाम् ।
गुरोः स्मृतिं निर्मलबोधबुद्धिं
प्रदेहि मातः परमं पदं श्रीः ॥१०३॥

पृथ्वीपतित्वं पुरुषोत्तमत्वं
विभूतिवासं विविधार्थसिद्धिम् ।
सम्पूर्णकीर्तिं बहुवर्षभोगं
प्रदेहि मे देवि ! पुनः पुनस्त्वम् ॥१०४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

वादार्थसिद्धिं बहुलोकवश्यं
वयःस्थिरत्वं ललनासु भोगम् ।
पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं
प्रदेहि मे भार्गवि ! जन्मजन्मनि ॥१०५॥
सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः
विभूतिवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ।
विज्ञानवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः
सौभाग्यवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ॥१०६॥

अथ शिरोबीजम्

ॐ यं हं कं लं पं श्रीः।

ध्यायेल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखीं कोटिबालार्कभासां
विद्युद्वर्णाम्बरवरधरां भूषणाढ्यां सुशोभाम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-I

बीजापूरं सरसिजयुगं बिभ्रतीं स्वर्णपात्रं
भर्त्रा युक्तां मुहुरभयदां मह्यमप्यच्युतश्रीः ॥१०७॥
गुह्याऽतिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥१०८॥

इत्यथर्वणरहस्ये लक्ष्मीहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

नारायणहृदयस्तोत्रम्

आचम्य, प्राणानायम्य । देशकालौ निर्दिश्य, ममाऽभीष्टसिद्ध्यर्थं सङ्कलीकरणरीत्या सम्पुटीकरणरीत्या वा नारायणहृदयस्य सकृदावर्तनं करिष्ये ।

विनियोगः

अस्य श्रीनारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता,

---

आचमंन और प्राणायाम कर, 'देशकालौ–' से 'सकृदावर्तनं करिष्ये' तक पढ़कर संकल्प करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

ॐ बीजम्, नमः शक्तिः, नारायणायेति कीलकम् श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

करन्यासः

ॐ नारायणः परं ज्योतिरित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ नारायणः परं ब्रह्मेति तर्जनीभ्यां नमः, ॐ नारायणः परो देव इति मध्यमाभ्यां नमः,

---

विनियोग— तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर 'अस्य श्रीनारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य०' से 'विनियोगः' तक पढ़कर विनियोग के लिए जल छोड़े ।

करन्यास—उसके बाद करन्यास करे, जैसे— 'ॐ नारायणः परं ज्योतिरित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः' यह मन्त्र पढ़कर दोनों हाथ के अँगूठे का स्पर्श करे। 'ॐ नारायणः परं ब्रह्मेति तर्जनीभ्यां नमः' से दोनों तर्जनी अँगुलियों को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ॐ नारायणः परो ध्यातेति अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ नारायणः परं धामेति कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
ॐ नारायणः परो धर्म इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
एवं हृदयादि न्यस्य, दिग्बन्धः कार्यः।

छुए। 'ॐ नारायणः परो देव इति मध्यमाभ्यां नमः' मन्त्र पढ़कर दोनों हाथ की मध्यमा अँगुलि को छुए। 'ॐ नारायणः परो ध्यातेति अनामिकाभ्यां नमः' मन्त्र पढ़कर दोनों हाथकी अनामिका अँगुलियों का स्पर्श करे, 'ॐ नारायणः परं धामेति कनिष्ठिकाभ्यां नमः' से दोनों हाथ की कानी अँगुलियों का स्पर्श और 'ॐ नारायणः परो धर्म इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः' इस मन्त्र से दोनों हाथ के तलवे का स्पर्श करे।

पूर्वोक्त प्रकार से हृदयादिन्यास भी करे। पश्चात्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

ॐ ऐन्द्र्यादिदशदिशो ॐ नमः, सुदर्शनाय सहस्राय हुँ फट् बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा इति प्रतिदिशं योज्यम् ।

ध्यानम्

उद्यदादित्यसङ्काशं पीतवाससमच्युतम्।
शङ्खचक्रगदापाणिं ध्यायेल्लक्ष्मीपतिं हरिम्।।

मन्त्रः–

'ॐ नमो नारायणाय' इति मन्त्रस्य जपः।

'ॐ ऐन्द्र्यादिदशदिशो ॐ नमः०' से 'नमश्चक्राय स्वाहा' तक पढ़कर ऐन्द्र्यादि दश दिशाओं का दिग्बन्धन करना चाहिए।

तदनन्तर 'उद्यदादित्यसङ्काशं०' श्लोक पढ़कर भगवान् नारायण का ध्यान करे और 'ॐ नमो नारायणाय' मन्त्र का जप करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मूलाष्टकम्

ॐ नारायणः परं ज्योतिरात्मा नारायणः परः ।
नारायणः परं ब्रह्म नारायण नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥
नारायणः परो देवो दाता नारायणः परः ।
नारायण परो ध्याता नारायण नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥
नारायणः परं धाम ध्यानं नारायणः परः ।
नारायणः परो धर्मो नारायण नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

उसके बाद स्वस्थ चित्त होकर 'ॐ नारायणः परं ज्योतिरात्मा०' (श्लोक १) से आरम्भ कर– 'धन्यो भवति तत्त्वतः' (श्लोक २२) तक 'नारायणहृदय' का पाठ करना चहिए ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

lic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-I

नारायणः परो वैद्यो विद्या नारायणः परः ।
विश्वं नारायणः साक्षान्नारायण नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥
नारायणाद् विधिर्जातो जातो नारायणाच्छिवः ।
जातो नारायणादिन्द्रो नारायण ! नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥
रविर्नारायणं तेजश्चान्द्रं नारायणमहः ।
वह्निर्नारायणः साक्षान्नारायण ! नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥
नारायण! उपास्यः स्याद् गुरुर्नारायणः परः ।
नारायण! परो बोधो नारायण ! नमोऽस्तु ते ॥ ७॥
नारायणः फलं मुख्यं सिद्धिर्नारायणः सुखम् ।
सेव्यो नारायणः शुद्धो नारायण ! नमोऽस्तु ते ॥ ८॥

इति मूलाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

प्रार्थनादशकम्

नारायणस्त्वमेवाऽसि भक्तानां हृदि संस्थितः।
प्रेरकः प्रेर्यमाणानां त्वया प्रेरितमानसः॥ १ ॥
त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा जपामि जनपावनम्।
ज्ञानोपासन-मार्गाणां भावहृद्भावबोधकः॥ २ ॥
भावार्थकृद्भावभूतो भावसौख्यप्रदो भव।
त्वन्मायामोहितं विश्वं त्वयैव परिकल्पितम्॥ ३ ॥
त्वदधिष्ठानमात्रेण सैव सर्वार्थकारिणी।
त्वमेव तां पुरस्कृत्य मम कामान् समर्पय॥ ४ ॥
न मे त्वदन्यस्त्राताऽस्ति त्वदन्यन्न हि दैवतम्।
त्वदन्यं न हि जानामि पालकं पुण्यरूपकम्॥ ५ ॥
यावत्सांसारिको भावो मनःस्थो भावनात्मकः।
तावत् सिद्धिर्भवेत् साध्या सर्वथा सर्वदा विभो !॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

lic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

पापिनामहमेवाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणीः ।
दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ॥ ७ ॥
त्वयाऽप्यहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता ।
आमयो नैव सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः ॥ ८ ॥
पापसङ्घपरिक्रान्तः पापात्मा पापरूपधृक् ।
त्वदन्यः कोऽत्र पापेभ्यस्त्राता मे जगतीतले ॥ ९ ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या च गुरुस्त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ! ॥१० ॥
प्रार्थनादशकं चैव मूलाष्टकमुदाहृतम् ।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं तस्य लक्ष्मीः स्थिरा भवेत् ॥ ११ ॥
नारायणस्य हृदयं सर्वाऽभीष्टफलप्रदम् ।
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं यदि चैत्तद्विना कृतम् ॥ १२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं लक्ष्मीः क्रुद्ध्यति सर्वदा ।
एतत्सङ्कलितं स्तोत्रं सर्वकामफलप्रदम् ॥१३॥
लक्ष्मीहृदयकं चैव तथा नारायणात्मकम् ।
जपेद्यः सङ्कलीकृत्य सर्वाऽभीष्टमवाप्नुयात् ॥१४॥
नारायणस्य हृदयमादौ जप्त्वा ततः परम् ।
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं जपेन्नारायणं पुनः ॥१५॥
पुनर्नारायणं जप्त्वा पुनर्लक्ष्मीकृतं जपेत् ।
पुनर्नारायणं जाप्यं सङ्कलीकरणं भवेत् ॥१६॥
एवं मध्ये द्विवारेण जपेत् सङ्कलितं तु तत् ।
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं सर्वकाम-प्रकाशकम् ॥१७॥
तद्वज्जपादिकं कुर्यादेतत् सङ्कलितं शुभम् ।
सर्वान् कामानवाप्नोति आधि-व्याधि-भयं हरेत् ॥१८॥
गोप्यमेतत् सदा कुर्यान्न सर्वत्र प्रकाशयेत् ।
इति गुह्यतमं शास्त्रं प्राप्तं ब्रह्मादिकैः पुरा ॥१९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

lic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन गोपयेत् साधयेत् सुधीः ।
यत्रैतत् पुस्तकं तिष्ठेल्लक्ष्मीनारायणात्मकम् ।। २० ।।
भूत-पैशाच-बेताला न स्थिरास्तत्र सर्वदा ।
लक्ष्मीहृदयकं प्रोक्तं विधिना साधयेत् सुधीः ।। २१ ।।
भृगुवारे च रात्रौ च पूजयेत् पुस्तकद्वयम् ।
सर्वथा सर्वदा सत्यं गोपयेत् साधयेत् सुधीः ।
गोपनात् साधनाल्लोके धन्यो भवति तत्त्वतः ।। २२ ।।

इत्यथर्वणरहस्योत्तरभागे नारायणहृदयस्तोत्रं
सम्पूर्णम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लक्ष्मीलहरिः

[१]

समुन्मीलन्नीलाम्बुज-निकरनीराजित-रुचा-
मपाङ्गानां भृङ्गैरमृतलहरी श्रेणिमसृणैः ।
ह्रिया हीनं दीनं भृशमुदरलीनं करुणया
हरिश्यामा सा मामवतु जडसामाजिकमपि ॥

पण्डितराज जगन्नाथकृत 'गङ्गालहरी' से प्रायः सभी पाठक परिचित हैं। उन्हींकी यह रचना है, जो पाण्डित्यपूर्ण, भावगाम्भीर्य एवं शब्दगाम्भीर्य से ओत-प्रोत है। इसका पाठ स्वस्थ चित्त होकर प्रत्येक श्रद्धालु पाठक को प्रतिदिन 'समुन्मीलन्नीलाम्बुजनिकर-नीराजितरुचा' श्लोक १ से आरम्भ कर 'मृदुलवर्णावलिमिमाम्' श्लोक ४१ तक लक्ष्मीप्राप्त्यर्थ एवं स्वान्तःसुखाय अवश्य करना चाहिए ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

[२]

समुन्मीलत्वन्तःकरणकरुणोद्गारचतुरः
करिप्राणत्राणप्रणयिनि दृगन्तस्तव मयि।
यमासाद्योन्माद्य द्विपनियुत-गण्डस्थलगलन्
मदक्लिन्नद्वारो भवति सुखसारो नरपतिः॥

[३]

उरस्यस्य भ्रश्यत् कबरभरनिर्यत्सुमनसः
पतन्ति स्वर्गालाः स्मरशरपराधीनमनसः।
सुरास्तं गायन्ति स्फुरिततनु-गङ्गाधरमुखा-
स्तवाऽयं दृक्पातो यदुपरि कृपातो विलसति॥

[४]

समीपे सङ्गीतस्वरमधुरभङ्गी मृगदृशां
विदूरे दानान्ध-द्विरदकलभोद्दाम-निनदः।
बहिर्द्वारि तेषां भवति हयहेषाकलकलो
दृगेषा ते येषामुपरि कमले देवि ! सदया ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

[५]

अगर्व्यैरिन्द्राद्यैरपि परमपुण्यैः परिचितो
जगज्जन्मस्थान-प्रलयरचनाशिल्पनिपुणः ।
उदञ्चत्पीयूषाम्बुधिलहरि-लीलामनुहर-
न्नपाङ्गस्तेऽमन्दं मम कलुषवृन्दं दलयतु ॥

[६]

नमन् मौलिश्रेणि-त्रिपुरपरिपन्थि-प्रतिलसत्
कपर्दव्यावृत्तिस्फुरितफणिफूत्कारचकितः ।
लसत्फुल्लाम्भोजम्रदिमहरणः कोऽपि चरण-
श्चिरं चेतश्चारी मम भवतु वारीशदुहितुः ॥

[७]

प्रबालानां दीक्षा गुरुरपि च लाक्षारुणरुचां
नियन्त्री बन्धूकद्युतिनिकरबन्धूकृतिपटुः ।
नृणामन्तर्ध्वान्तं निबिडमपहर्तुं तव किल
प्रभातश्रीरेषा चरणरुचिवेषा विजयते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

[८]

प्रभातप्रोन्मीलत्कमलवनसञ्चारसमये
शिखाः किञ्जल्कानां विदधति रुजं यत्र मृदुलः।
तदेतन्मातस्ते चरणमरुणश्लाघ्यकरुणं
कठोरा मद्वाणी कथमियमिदानीं प्रविशतु ॥

[९]

स्मितज्योत्स्नामज्जद् द्विजमणिमयूखामृतझरै-
र्निषिञ्चन्तीं विश्वं तव विमलमूर्तिं स्मरति यः।
अमन्दं स्यन्दन्ते वदनकमलादस्य कृतिनो
विविक्तौ वैकल्पाः सततमविकल्पा नवगिरः॥

[१०]

शरौ मायाबीजौ हिमकरकलाक्रान्तशिरसौ
विधायोर्ध्वं बिन्दुं स्फुरितमिति बीजं जलधिजे ।
जपेद् यः स्वच्छन्दं स हि पुनरमन्दं गजघटा-
मदभ्राम्यद्भृङ्गैर्मुखरयति वेश्मानि विदुषाम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

[११]

स्मरो नामं नाम त्रिजगदभिरामं तव पदं
प्रपेदे सिद्धिं यां कथमिव नरस्तां कथयतु।
यया पातं पातं पदकमलयोः पर्वतचरो
हरो हा रोषार्द्रामनुनयति शैलेन्द्रतनयाम्॥

[१२]

हरन्तो निःशङ्कं हिमकर-कलानां रुचिरतां
किरन्तः स्वच्छन्दं किरणमय-पीयूष-निकरम्।
विलुम्पन्तु प्रौढा हरिहृदयहाराः प्रियतमा
ममाऽन्तःसन्तापं तव चरणशोणाम्बुजनखाः॥

[१३]

विषान्माणिक्यानां विगलितनिमेषं निमिषता-
ममन्दं सौन्दर्यं तव चरणयोरम्बुधिसुते।
पदालङ्काराणां जयति कलनिक्वाणनपटु-
रुदञ्चन्नुद्दामः स्तुतिवचनलीलाकलकलः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

[१४]

मणिज्योत्स्नाजालै-र्निजतनुरुचां मांसलतया
जटालं ते जङ्घा युगलमघभङ्गाय भवतु ।
भ्रमन्ती यन्मध्ये दरदलितशोणाम्बुजरुचां
दृशां माला नीराजनमिव विधत्ते मुररिपोः ॥

[१५]

हरद्गर्वं सर्वं करिपतिकराणां मृदुतया
भृशं भाभिर्दम्भं कनकमयरम्भावनिरुहाम् ।
सलज्जानुज्योत्स्ना-तरणिपरिणद्धं जलधिजे
तवोरुद्वन्द्वं नः श्लथयतु भवोरुज्वरभयम् ॥

[१६]

कलक्वाणां काञ्चीं मणिगणजटालामधिवहन्
वसानः कौसुम्भं वसनमसनं कौस्तुभरुचाम् ।
मुनिव्रातैः प्रातः शुचिवचनजातैरतिनुतं
नितम्बस्ते बिम्बं हसति नवमम्बाम्बरमणेः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

[१७]

जगन्मिथ्याभूतं मम निगदतां वेदवचसा-
मभिप्रायो नाद्यावधि-हृदयमध्याविशदियम् ।
इदानीं विश्वेषां जनकमुदरं ते विमृशतो
विसन्देहं चेतोऽजनि गरुडकेतोः प्रियतमे ॥

[१८]

अनल्पैर्वादीन्द्रैरगणितमहायुक्तिनिवहै-
र्निरस्ताविस्तारं क्वचिदकलयन्तीं तनुमपि ।
असत्ख्यातिव्याख्याधिकचतुरिमाख्यातमहिमा-
वलग्ने लग्नेयं सुगतमत–सिद्धान्तसरणिः ॥

[१९]

निदानं शृङ्गारप्रकरमकरन्दस्य कमले
महानेवालम्बो हरिनयनरोलम्बवरयोः ।
निधानं शोभानां निधनमनुतापस्य जगतो
जवेनाभीतिं मे दिशतु तव नाभीसरसिजम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

[२०]

गभीरामुद्वेलां प्रथमरसकल्लोलमिलितां
विगाढुं ते नाभी-विमलसरसीं गौर्मम मनाक् ।
पदं यावन्न्यस्यत्यहह विनिमग्नैव सहसा
न हि क्षेमं सूते गुरुमहिमभूतेष्वविनयः ॥

[२१]

कुचौ ते दुग्धाम्भोनिधि–कुलशिखामण्डनमणे
हरेते सौभाग्यं यदि सुरगिरेश्चित्रमिह किम् ।
त्रिलोकीलावण्याहरणनवलीलानिपुणयो-
र्ययोर्दत्ते भूयः करमखिलनाथो मधुरिपुः ॥

[२२]

हरक्रोधत्रस्यन्-मदननव-दुर्गद्वयतुलां
दधत्कोकद्वन्द्व–द्युतिदमन–दीक्षाधिगुरुताम् ।
तवैतद्वक्षोज-द्वितयमरविन्दाक्षमहिले
मम स्वान्तध्वान्तं किमपि च नितान्तं गमयतु ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

[२३]

अनेकब्रह्माण्ड–स्थितिनियम–लीलाविलसिते
दयापीयूषाम्भोनिधि–सहजसंवासभवने ।
विधोश्चित्तायामे हृदयकमले ते तु कमले
मनाङ्मन्निस्तार–स्मृतिरपि च कोणे निवसतु ॥

[२४]

मृणालीनां लीलाः सहजलवणिम्ना लघयतां
चतुर्णां सौभाग्यं तव जननि ! दोष्णां वदतु कः? ।
लुठन्ति स्वच्छन्दं मरकतशिलामांसलरुचः
श्रुतीनां स्पर्धां ये दधत इव कण्ठे मधुरिपोः ॥

[२५]

अलभ्यं सौरभ्यं कविकुलनमस्या रुचिरता
तथापि त्वद्धस्ते निवसदरविन्दं विकसितम् ।
कलापे काव्यानां प्रकृतिकमनीयस्तुतिविधौ
गुणोत्कर्षाधानं प्रथितमुपमानं समजनि ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

[२६]

अनल्पं जल्पन्तु प्रतिहतधियः पल्लवतुलां
रसज्ञामज्ञानां क इव कमले मन्थरयतु।
तपन्तु श्रीमीक्षावितरणवशीभूतजगतां
कराणां सौभाग्यं तव तुलयितुं तुङ्गरसनाः॥

[२७]

समाहारः श्रीणां विरचितविहारो हरिदृशां
परीहारो भक्त–प्रभव–भवसन्तापसरणेः।
प्रहारः सर्वासामपि च विपदां विष्णुदयिते
ममोद्धारोपायं तव सपदि हारो विमृशतु॥

[२८]

अलङ्कुर्वाणानां मणिगणघृणीनां लवणिमा
यदीयाभिर्भाभिर्भजति महिमानं लघुरपि।
सुपर्वश्रेणीनां जनितपरसौभाग्यविभवा–
स्ववाङ्गुल्यस्ता मे ददतु परिवामेऽभिलषितम्॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

[२९]

तपस्तेपे तीव्रं किमपि परितप्य प्रतिदिनं
तव ग्रीवालक्ष्मी लवपरिचयादाप्त-विभवम् ।
हरिः कम्बुं चुम्बत्यथ वहति पाणौ किमधिकं
वदामस्तत्राऽयं प्रणयवशतोऽस्यै स्पृहयति ॥

[३०]

अभेदप्रत्यूहः सकलहरिदुल्लासनविधि-
र्विलीनो लोकानां स हि नयनतापोऽपि कमला ।
तवाऽस्मिन् पीयूषं किरति वदने रम्यवदने
कुतो हेतोश्चेतो विधुरयमुदेति स्म जलधेः ॥

[३१]

मुखाम्भोजे मन्दस्मित-मधुरकान्त्या विकसतां
द्विजानां ते हीरावलिविहित-नीराजनरुचाम् ।
इयं ज्योत्स्ना काऽपि स्रवदमृतसन्दोहसरसा
ममोद्यद्दारिद्र्य-ज्वरतरुणतापं तिरयतु ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

[३२]

कुलैः कस्तूरीणां भृशमनिशमाशास्यमपि च
　　प्रभात-प्रोन्मीलन्नलिन-निवहैरश्रुतचरम् ।
वहन्तः सौरभ्यं मृदुगतिविलासा मम शिवं
　　तव श्वासा नासापुट-विहितवासा विदधता ॥

[३३]

कपोले ते दोलायित-ललितलोलालकवृते
　　विमुक्ताद्धम्मिलादभिलसति मुक्तावलिरियम् ।
स्वकीयानां बन्दीकृतमसहमानैरिव बला-
　　न्निबध्योर्ध्वं कृष्टा तिमिरनिकुरम्बैर्विधुकला ॥

[३४]

प्रसादो यस्याऽयं नमदमितगीर्वाणमुकुट-
　　प्रसर्पज्ज्योत्स्नाभिश्चरणतल-पीठार्चितविधिः ।
दृगम्भोजं तत्ते गतिहसित-मत्तेभगमने
　　वने लीनैर्दीनैः कथय कथमीयादिह तुलाम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

[३५]

दुरापा दुर्वृत्तैर्दुरितदमने दारणभरा
दयार्द्रा दीनानामुपरि दलदिन्दीवरनिभा।
दहन्ती दारिद्र्यद्रुमकुलमुदारद्रविणदा
त्वदीया दृष्टिर्मे जननि दुरदृष्टं दलयतु॥

[३६]

तव श्रोत्रे फुल्लोत्पलसकलसौभाग्यजयिनी
सदैव श्रीनारायणगुण-गणौघप्रणयिनी।
रवैर्दीनां लीनामनिशमवधानातिशयिनीं
ममाप्येतां वाचं जलधितनये गोचरयताम्॥

[३७]

प्रभाजालैः प्राभातिकदिनकराभापनयनं
तवेदं खेदं मे विवटयतु ताटङ्कयुगलम्।
महिम्ना यस्याऽयं प्रलयसमयेऽपि क्रतुभुजां
जगत्पायं पायं स्वपिति निरपायं तव पतिः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-I

[३८]

निवासो मुक्तानां निविडतरनीलाम्बुदनिभ-
स्तवायं धम्मिल्लो विमलयतु मल्लोचनयुगम् ।
भृशं यस्मिन् कालागुरुबहुलसौरभ्यनिवहैः
पतन्ति श्रीभिक्षार्थिन इव मदान्धा मधुलिहः॥

[३९]

विलग्नौ ते पार्श्वद्वयपरिसरे मत्तकरिणौ
करोन्नीतैरञ्चन्मणिकलशमुग्धास्यगलितैः ।
निषिञ्चन्तौ मुक्तामणिगणचयैस्त्वां जलकणै-
र्नमस्यामो दामोदरगृहिणि दारिद्र्यदलिताः॥

[४०]

अये मातर्लक्ष्मि ! त्वदरुणपदाम्भोजनिकटे
लुठन्तं बालं मामविरलगलद्बाष्पजटिलम्।
सुधासेकस्निग्धैरतिमसृणमुग्धैः करतलैः
स्पृशन्ती मा रोदीरितिवद समाश्वास्यसि कदा॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

[४१]

रमें ! पद्मे ! लक्ष्मि ! प्रणतजनकल्पद्रुमलते !
सुधाम्भोधेः पुत्रि ! त्रिदशनिकरोपास्तचरणे।
परे नित्यं मातर्गुणमयि परब्रह्ममहिले
जगन्नाथस्याकर्णय मृदुलवर्णावलिमिमाम् ॥

इति पण्डितराज-श्रीजगन्नाथविरचिता

लक्ष्मीलहरिः समाप्ता।

•

कनकधारास्तोत्रम्

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृता-ऽखिल-विभूति-रपाङ्गलीला
माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-I

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपा-प्रणिहितानि गता-ऽऽगतानि ।
माला-दृशो-र्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागर-सम्भवायाः ॥ २॥
विश्वामरेन्द्रपद-विभ्रमदानदक्ष-
मानन्द - हेतुरधिकं मुर-विद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्ध-
मिन्दीवरोदर-सहोदर-मिन्दिरायाः ॥ ३॥
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द-
मानन्द-कन्दमनिमेष-मनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकर-स्थित-कनीनिक-पक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्ग-शयाङ्गनायाः ॥ ४॥
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ५॥
कालाम्बुदालि-ललितोरसि कैटभारे-
र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव ।
मातुः समस्त-जगतां महनीय-मूर्ति-
र्भद्राणि मे दिशतु भार्गव-नन्दनायाः ॥ ६॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत् प्रभावान्
माङ्गल्यभाजि मधु-माथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत् तदिह मन्थर-मीक्षणार्द्ध
मन्दा-ऽलसञ्च मकरालय-कन्यकायाः ॥ ७॥
दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा-
मस्मिन्न किञ्चन-विहङ्गशिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्म-घर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायण-प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥ ८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

इष्टा-विशिष्ट-मतयोऽपि यया दयार्द्र-
दृष्ट्या त्रिविष्टप-पदं सुलभं लभन्ते ।
दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर-विष्टरायाः ॥९॥

गीर्देवतेति मरुडध्वज-सुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखर-वल्लभेति ।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय-केलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैक-गुरोस्तरुण्यै ॥१०॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्म-फलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीय-गुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र-निकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै ॥११॥

नमोऽस्तु नालीक-निभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूत्यै ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै
नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै ॥१२॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि
साम्राज्यदान-विभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्-वन्दनानि दुरिता-हरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥१३॥
यत्कटाक्ष-समुपासना-विधिः
सेवकस्य सकलार्थ-सम्पदः ।
शन्तनोति वचना-ऽङ्ग-मानसै-
स्त्वां मुरारि-हृदयेश्वरीं भजे ॥१४॥
सरसिज-निलये ! सरोजहस्ते!
धवलतमांशुक-गन्ध-माल्यशोभे! ।
भगवति हरिवल्लभे ! मनोज्ञे!
त्रिभुवन-भूतिकरि ! प्रसीद मह्यम् ॥१५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

दिग्घस्तिभिः कनक-कुम्भ-मुखावसृष्ट-
स्ववहिनी-विमल-चारु-जलप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथ-गृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥१६॥
कमले ! कमलाक्ष-वल्लभे ! ।
त्वं करुणापूर-तरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥१७॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवन-मातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतरभाग्य-भागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥१८॥
सुवर्णधारास्तोत्रं यच्छङ्कराचार्य-निर्मितम् ।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत् ॥१९॥

*इति श्रीमच्छङ्कराचार्य-विरचितं कनकधारा-
स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।*

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण-रजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्चं पुरुषानहम् ॥२॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद-प्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारा-
मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां
तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये
अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो
वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु
मा याऽन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

इति श्रीसूक्तं समाप्तम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

लक्ष्मीसूक्तम्

इन्द्र उवाच

नमस्ते सर्वलोकानां जननी त्रिगुणात्मिका ।
श्रेयस्कृता च पद्माक्षी विष्णोर्वक्षःस्थले स्थिता ॥१॥
त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपावनी ।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूमिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती ॥२॥
यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या सुशोभना ।
आत्मविद्या च देवि! त्वं विमुक्तिः फलदायिनी ॥३॥
आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च ।
सौम्याऽतिसौम्ये! जगत्पूज्ये! त्वयैतद् देवि! पूरितम् ॥४॥
कान्त्या त्वया धृतं देवि ! सर्वयज्ञमयं वपुः ।
अध्यास्ते देवदेवेशि ! योगचिन्त्यसदा भृता ॥५॥
त्वया देवि ! परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम् ।
विनष्टप्रायमभवत् त्वयेदानीं समेधितम् ॥६॥
दाराः पुत्रास्तथा गावः पुरधान्यं धनादिकम् ।
भवत्येवं महाभागे नित्यं त्वद्-वीक्षणान्नृणाम् ॥७॥
शरीरा-ऽऽरोग्यमैश्वर्यमरिपक्ष-क्षयः सुखम् ।
देवि ! त्वद् दृष्टिदृष्टानां पुरुषाणां तु दुर्लभम् ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

त्वं माता सर्वभूतानां देवदेवो हरिः पिता ।
त्वयैतद् विष्णुना चाऽम्ब ! जगद्-व्याप्तं चराऽचरम् ॥ ९॥
मा नः कोशं तथा कुप्यं मद्गृहं मत्परिच्छदम् ।
मा शरीरं कलत्रं च त्यजेथाः सर्वपावनि ! ॥१०॥
मत्पुत्रान् मत्सुहृद्वर्गं मत्पशून मद्-विभूषणम् ।
मा त्यजेथा हि देवस्य विष्णोर्वक्षःस्थलालये ॥११॥
सत्त्वेन सत्त्व-शौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः ।
त्यज्यते ते नराः सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयाऽनघे ॥१२॥
त्वया विलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः ।
कुलैश्वर्यैश्च वर्धन्ते पुरुषा निर्गुणा ह्यपि ॥१३॥
स श्लाघ्यः स गुणी धन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान् ।
स शूरः स त्वविक्रान्तस्त्वया देवि ! विलोकितः ॥१४॥
सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकला गुणाः ।
पराङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे ॥१५॥
न ते वर्णयितुं शक्ता गुणा वासुकि-जिह्वया ।
प्रसीद देवि ! पद्माक्षि ! नाऽस्माभिस्तु कदाचन ॥१६॥

इति लक्ष्मीसूक्तं सम्पूर्णम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

लक्ष्मी (धन)-प्राप्ति के लिए लक्ष्मी-साधना

लक्ष्मी अर्थात् धन प्राप्त करने के लिए अनेक उपाय तन्त्र-शास्त्रों में वर्णित हैं, जिनमें महालक्ष्मी-कवच का पाठ तथा महालक्ष्मी यन्त्र का पूजन भी प्रमुख है। क्योंकि, यन्त्र भी महालक्ष्मी का स्वरूप है।

लक्ष्मी पूजन के लिए, शुभ मुहूर्त-

मास-वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, अगहन एवं माघ।

तिथि-द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, द्वादशी, त्रयोदशी (शुक्ल-पक्ष) और पूर्णिमा ।

वार-बुधवार, गुरुवार, एवं शुक्रवार।

नक्षत्र-रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा और रेवती।

आवश्यकतानुसार आश्विन तथा चैत्र के दोनों नवरात्र एवं कार्तिक में धनतेरस से द्वितीया पर्यन्त पाँच दिन तक महालक्ष्मी के पूजन-अर्चन तथा अनुष्ठान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

प्रारम्भ करने के लिए श्रेष्ठ और शीघ्र सिद्धिदायक माने गये हैं।

उपर्युक्त किसी भी शुभ दिन–मुहूर्त में महा लक्ष्मी यन्त्र की रचना–स्थापना कर, उसका स–विधि पूजन आरम्भ करना चाहिए। भोजपत्र पर अष्टगन्ध, केसर, लालचन्दन, सफेद चन्दन, रोरी, कपूर, कस्तूरी, हल्दी और गोरोचन की स्याही और स्वर्ण की नीब अथवा अनार की कलम से यन्त्र लिखना चाहिए। यदि ताम्रपत्र पर यन्त्र बना हुआ मिल जाये तो उसे पञ्चामृत से स्नान

श्री महालक्ष्मी यन्त्र

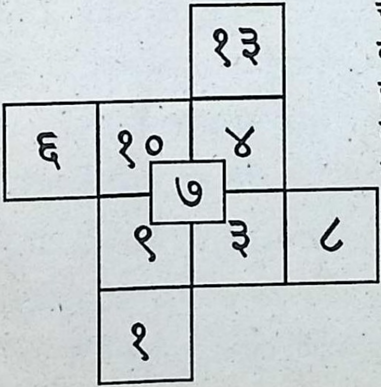

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

कराकर अष्टगन्ध का लेप कर देना आवश्यक है।

यन्त्र को स्नान कराकर या जल से अभिसिंचन कर लाल आसन पर उसे प्रतिष्ठित करें। पुनः लाल चन्दन, लाल पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से *'ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः'* मन्त्र से यन्त्र का पूजन करें। इस यन्त्र के पूजन एवं दर्शन से धन-धान्य की वृद्धि और समस्त अभीष्ट सुखों की प्राप्ति होती है।

पूजन के पश्चात् इस यन्त्र को शीशे में मढ़ाकर किसी निश्चित स्थान पर रख दें या दीवाल में टाँग दें। प्रतिदिन प्रातःकाल स्नानादि करने के बाद धूप, दीप और नैवेद्य आदि समर्पित करके महालक्ष्मी का ध्यान कर लक्ष्मी-स्तोत्र एवं कवच आदि का पाठ करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

महालक्ष्मी के ध्यान-श्लोक-

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम् ।
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधानां
आद्यां शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम् ॥ १ ॥
समस्त - सम्पत् - सुखदां महाश्रियं
समस्त - सौभाग्यकरीं महाश्रियम् ।
समस्त - कल्याणकरीं महाश्रियं
भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम् ॥ २ ॥

यदि सुलभ हो, तो यन्त्र के पास महालक्ष्मी की मूर्ति या फोटो भी रख देने से देवी के ध्यान करने में विशेष सुविधा प्राप्त होती है। लक्ष्मी-जप करने के लिए [illegible] की माला सर्वोत्तम है। अथवा काले-चन्दन या रुद्राक्ष की माला भी सद्यः प्रभावकारी सिद्ध होती है।

मन्त्र जप के समय कलश के ऊपर घी का अखण्ड दीपक जलते रहना चाहिए। दैनिक-पूजा में किसी प्रकार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

की अशान्ति न हो, इसके लिए वायु-प्रकाशयुक्त शुद्ध एवं एकांन्त स्थान होना आवश्यक है।

प्रतिदिन पूजा के समय कम-से-कम एक माला जप करना चाहिए। सुविधानुसार अधिक भी कर सकते हैं। किन्तु नियमत: उतनी ही संख्या में जप बराबर करते रहना चाहिए। विशेष अनुष्ठान में एक लाख मन्त्र जप करना हो, तो इक्कीस दिन में पूरा कर उसी मन्त्र द्वारा जप-संख्या का दशांश हवन करने का विधान है। साधन के अभाव में अशक्त होने पर श्रद्धा-भक्तिपूर्वक एक माला से हवन करें और कुमारी कन्याओं को भोजन कराना भी लाभदायक सिद्ध होता है, किन्तु साधक को पूर्ण आस्था, निष्ठा, पवित्रता एवं संयम-नियम के साथ अनुष्ठान करने से ही सफलता सुनिश्चित है।

हवन सामग्री-शहद, शक्कर, घी और बिल्वफल। दैनिक-पूजा में प्रचलित हवन-सामग्री का भी प्रयोग कर सकते हैं ।

जप के लिए लक्ष्मी मन्त्र-

१. श्रीं। २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं। ३. ॐ श्रीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

महालक्ष्म्यै नमः। ४. ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा ५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौं जगत्प्रसूत्यै नमः। ६. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। ७. ॐ श्रीं ह्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः । ८. ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा। ९. ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

उपर्युक्त मन्त्रों में-से किसी भी एक मन्त्र का जप किया जा सकता है। वैसे सभी अपने में पूर्ण हैं और लक्ष्मी का सान्निध्य प्राप्त कराने में सक्षम हैं। जप करने के बाद निम्नलिखित श्लोक द्वारा महालक्ष्मी को प्रणाम करें—

अरुण-कमल-संस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा
करकमल-धृतेष्टा-ऽभीति-युग्माम्बुजा च ।
मणिकनक-विचित्रा-ऽलङ्कृता-ऽऽकल्पजालैः
सकल-भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः ॥

इति लक्ष्मी-साधना-विधि समाप्त ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

लक्ष्मीकवचम्

लक्ष्मीर्मे चाऽग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः।
नारायणी शीर्षदेशे सर्वाङ्गे श्रीस्वरूपिणी ॥१॥
रामपत्नी प्रत्यङ्गे तु सदाऽवतु रमेश्वरी।
विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा ॥२॥
जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा।
हरिप्रिया हरिरामा जयङ्करी महोदरी ॥३॥
कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्णमनोमोहिनी।
जयङ्करी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभङ्करी ॥४॥
सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूट-निवासिनी।
भयं हरेत् सदा पायाद् भवबन्धाद् विमोचयेत् ॥५॥
कवचं तु महापुण्यं यः पठेत् भक्तिसंयुतः।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा मुच्यते सर्वसङ्कटात् ॥६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पठनं कवचस्यास्य पुत्र-धन-विवर्द्धनम् ।
भीतेर्विनाशनं चैव त्रिषु लोकेषु कीर्तितम् ॥७॥
भूर्जपत्रे समालिख्य रोचना-कुङ्कुमेन तु ।
धारणाद् गलदेशे च सर्वसिद्धीर्भविष्यति ॥८॥
अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।
मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्य प्रसादतः ॥९॥
गर्भिणी लभते पुत्रं बन्ध्या च गर्भिणी भवेत् ।
धारयेद् यदि कण्ठे च ह्यथवा बामबाहुके ॥१०॥
यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुवद् भवेत् ।
मृत्यु-व्याधिभयं तस्य नास्ति किञ्चिन् महीतले ॥११॥
पठेद् वा पाठयेद् वाऽपि शृणुयाच्छ्रावेदपि ।
सर्वपापविमुक्तस्तु लभते परमां गतिम् ॥१२॥
विपदि सङ्कटे घोरे तथा च गहने वने ।
राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः ।
पठनाद्धारणादस्य जयमाप्नोति निश्चितम् ॥१३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

अपुत्रा च तथा बन्ध्या त्रिपक्षं शृणुयादपि ।
सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्कं यशस्विनम् ॥१४॥
शृणुयाद् यः शुद्धबुद्ध्या द्वौ मासौ विप्रवक्त्रतः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वबन्धाद् विमुच्यते ॥१५॥
मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं शृणुयाद्यदि ।
रोगी रोगाद् विमुच्येत पठनान् मासमध्यतः ॥१६॥
लिखित्वा भूर्जपत्रे च ह्यथवा ताडपत्रके ।
स्थापयेन्नियतं गेहे नाऽग्निचौरभयं क्वचित् ॥१७॥
शृणुयाद् धारयेद् वाऽपि पठेद् वा पाठयेदपि ।
यः पुमान् सततं तस्मिन् प्रसन्ना सर्वदेवताः ॥१८॥
बहुना किमिहोक्तेन सर्वजीवेश्वरेश्वरी ।
आद्याशक्तिः सदा लक्ष्मीर्भक्तानुग्रहकारिणी ।
धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम् ॥१९॥

इति श्रीमहाकालविरचितं लक्ष्मीकवचं

समाप्तम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्

दिनमपि रजनी सायं प्रातः
शिशिरवसन्तौ पुनरायातः ।
कालः क्रीडति गच्छत्यायु-
स्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते (ध्रुवपदम्) ॥१॥
प्राप्ते सन्निहिते मरणे
नहि नहि रक्षति डुकृञ्-करणे ।
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानुः
रात्रौ चिबुक-समर्पित-जानुः ।
करतलभिक्षा तरुतलवास-
स्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥ २॥

यावद्वित्तोपार्जन-सक्त-
स्तावन्निज-परिवारो रक्तः ।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे
वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥ ३॥

जटिलो मुण्डी लुञ्चितकेशः
काषायाम्बर - बहुकृतवेषः ।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढ
उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥ ४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

भगवद्गीता किञ्चिदधीता
गङ्गाजल-लव-कणिका पीता ।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा
तस्य यमः किं कुरुते चर्चा ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥५॥

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं
दशनविहीनं जातं तुण्डम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं
तदपि न मुञ्चत्याशा-पिण्डम् ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥६॥

बालस्तावत् क्रीडासक्त-
स्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

olic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः
परमे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥ ७॥
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं
पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।
इह संसारे खलु दुस्तारे
कृपयाऽपारे पाहि मुरारे ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥ ८॥
पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः
पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः ।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं
तदपि न मुञ्चत्याशामर्षम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥९॥
वयसि गते कः कामविकारः
शुष्के नीरे कः कासारः।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारो
ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥१०॥
नारीस्तनभर-नाभिनिवेशं
मिथ्यांमाया-मोहावेशम् ।
एतन्मांस-वसादि-विकारं
मनसि विचारय बारम्बारम् ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥११॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-I

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः
का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारं
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम्।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥१२॥
गेयं गीतानामसहस्रं
ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम्।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं
देयं दीनजनाय च वित्तम्।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥१३॥
यावज्जीवो निवसति देहे
कुशलं तावत् पृच्छति गेहे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

गतवति वायौ देहापाये
भार्या बिभ्यति तस्मिन् काये ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥१४॥
सुखतः क्रियते रामाभोगः
पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः ।
यद्यपि लोके मरणं शरणं
तदपि न मुञ्चति पापाचरणम् ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥१५॥
रथ्याचर्पट-विरचितकन्थः
पुण्याऽपुण्य-विवर्जित-पन्थः ।
नाऽहं न त्वं नायं लोक-
स्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमते ॥१६॥
कुरुते गङ्गासागरगमनं
व्रतपरिपालनमथवा दानम् ।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन
मुक्तिर्न भवति जन्मशतेन ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
भज गोविन्दं मूढमत ॥१७॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं चर्पटपञ्जरिका-स्तोत्रं समाप्तम् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

लक्ष्मी-पूजा-विधान

दोहा–यहि विधि जो पूजा करै, मातु–चरन धरि सीस ।।
पूर्ण करै मनकामना, रमा सहित जगदीश ।।

भादौं शुक्ल पक्ष जब आवै । अष्टमि तिथि जो दिवस कहावै।।
उठिके प्रात करै असनाना । जो कुछ बनै करै सो दाना।।
अष्टमि को व्रत करै जो प्रानी । हर्षि–हृदय पूजहि महरानी ।।
सोरह दिन पूजा विधि करहीं । आश्विन कृष्ण जो अष्टमि परही।।
ता दिन उठके प्रात नहावै । धूप दीप नैवेद्य मँगावै।।
फल अक्षत अरु पान सुपारी । दूध दही घृत लावै सारी।।
सवा हाथ अरु लावै चुनरी । गढ़वावै चाँदी की मुँदरी।।
साफ वस्त्र तन धारण कीजै । रूप भगवती की कर दीजै।।
कलश नारियल एक धरावै । तामें वह मुँदरी पहिरावै।।
सवा हाथ ले काँचा डोरा । शुद्ध फूल का रहे कटोरा।।
तामें भरि गंगाजल पानी । होय शुद्ध मार्जन कर प्रानी।।
तेरह तरु के काठि मँगावे । वेद विधी से हवन करावै।।
सुमन कपूर अरगजा चन्दन । पढ़ के मन्त्र करे तब वन्दन।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

लक्ष्मी-प्रार्थना के मन्त्र-श्लोक-

त्वमेव जननी लक्ष्मी पिता लक्ष्मि ! त्वमेव च।
भ्राता त्वमेव च सखा लक्ष्मि ! विद्या त्वमेव च ॥
त्राहि त्राहि महालक्ष्मि ! त्राहि त्राहि सुरेश्वरि।
त्राहि त्राहि जगन्मात-र्दरिद्रात् त्राहि वेगतः ॥
नमस्तुभ्यं जगद्धात्रि ! नमस्तुभ्यं नमो नमः।
धर्माधारे नमस्तुभ्यं नमः सम्पति-दायिनी ॥
होय पूर्ण सोरह व्रत जबहीं । सोरह वस्त्र दान करि तबहीं ॥
होय शुद्ध बैठे पुनि सोई । मन का अर्थ सभी कुछ होई ॥
जय जय जय लक्ष्मी पुकारे । ध्यान लक्ष्मी को उच्चारे ॥
कछु सुवर्ण देवै धन दाना । तुरतै होत महा कल्याना ॥
मार्जन करत रहे हर बारा । फिर यह मन्त्र पढ़ै हज्जारा ॥
प्रकट होय देवी तहँ आवे । जो माँगे सोई फल पावे ॥
धन अरु धाम सम्पदा सारी । आशा पुरवहु सिन्ध कुमारी ॥
सिद्धि करै जो मन्त्र हमेशा । ताको कोइ न रहे कलेशा ॥

दोहा—जय जय जय जगदम्बिका, सिन्धु-सुता गुणखान।
मातु जननि दुख नासिनी, करै सदा कल्यान॥

इति लक्ष्मीपूजा—विधान समाप्त ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

लक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशिदिन सेवत हर-विष्णू-धाता ॥
ॐ जय लक्ष्मी माता०

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता ।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥
ॐ जय लक्ष्मी माता०

दुर्गारूप निरञ्जनि, सुख-सम्पति-दाता ।
जो कोइ तुमको ध्यावत, रिधि-सिधि-धन पाता ॥
ॐ जय लक्ष्मी माता०

तुम पाताल-निवासिनि, तुम हो शुभ-दाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भव-निधि की त्राता ॥
ॐ जय लक्ष्मी माता०

जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥
ॐ जय लक्ष्मी माता०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो राता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता०

शुभ-गुण-मन्दिर, सुन्दर क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता०

आरति लक्ष्मीजी की, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता०

इति लक्ष्मी जी की आरती समाप्त ।

●

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जगदीश्वर की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्त-जनों के सङ्कट छिन में दूर करे॥
ॐ जय जगदीश०

जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसै मन का। प्रभु०
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तन का॥
ॐ जय जगदीश०

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी। प्रभु०
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥
ॐ जय जगदीश०

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। प्रभु०
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥
ॐ जय जगदीश०

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता। प्रभु०
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥
ॐ जय जगदीश०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती। प्रभु०
किस विधि मिलूँ दयामय !, मैं तुमको कुमती।।
ॐ जय जगदीश०

दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे। प्रभु०
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।।
ॐ जय जगदीश०

विषय विकार मिटाओ, ताप हरो देवा। प्रभु०
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।
ॐ जय जगदीश०

इति देवरिया-जनपदान्तर्गत-'मझौली राज्य' वास्तव्येन
आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिणा संस्कृतं
श्रीसूक्तादि-समन्वितं भाषाटीकासहितं च
लक्ष्मीनारायणहृदयं समाप्तम्।

पुस्तक प्राप्ति-स्थान-
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

मुद्रक-भारत प्रेस, कचौड़ीगली, वाराणसी-१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

हमारे यहाँ की प्रकाशित धार्मिक पुस्तकें मँगाकर अवश्य लाभ उठावें

श्रीसूक्त- पुरुषसूक्त भा०टी०	१५)
शिवपुराण भाषा ग्लेज	२००)
चाणक्यनीतिदर्पण भा०टी०	२०)
रामायण मध्यम भा०टी०	२००)
रामायण मध्यम मूल दोहा चौपाई	७५)
वाल्मीकीय रामायण भाषा	२००)
अध्यात्म रामायण भा०टी०	२००)
आनन्द रामायण भाषा	२००)
राधेश्याम रामायण	४०)
भृगुसंहिता भाषा	१५०)
प्रेमसागर	६०)
श्रीमद् देवी भागवत भा०टी० सांची	६००)
श्रीमद्भागवत महापुराण भा०टी० साँची	६००)
सुखसागर भाषा मध्यम	२००)
दुर्गार्चन-पद्धति भा०टी०	१००)
दुर्गासप्तशती भा०टी० सजिल्द । मोटे अक्षरों में	६०)
दुर्गा सप्तशती भा०टी०	२५)
दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज	२०)
दुर्गा सप्तशती ३२ पेजी मूल	२५)
दुर्गा सप्तशती ६४ पेजी मूल	२०)
दुर्गाकवच भा०टी०	८)
दुर्गा कवच ३२ पेजी मूल	३)
दुर्गा रामायण	३०)
गणेश सहस्रनाम भाषा टीका	३०)
मन्त्र-सागर भाषा टीका	७५)
बगलोपासनपद्धति-बगलामुख रहस्य भाषा टीका	४०)
दत्तात्रेय तन्त्र-भाषा टीका	२०)
उड्डीश तन्त्र भाषा टीका	२०)
रसराजमहोदधि पाँचों भाग	२००)
बृहत्पाराशरहोराशास्त्र भा०टी०	२००)

मानसागरी भा०टी०	१००)
जातकाभरण भाषा टीका	८०)
बृहज्ज्योतिषसार भाषा टीका	७५)
ताजिक नीलकण्ठी भाषा टीका	७५)
कर्मविपाक संहिता भाषा टीका	७५)
चमत्कार चिन्तामणि भाषा टीका	८)
भाव कुतूहल भाषा टीका	७५)
मुहूर्तचिन्तामणि भाषा टीका	६०)
लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	४०)
घाघ-भड्डरी की कहावतें भा०टी०	२०)
विश्वकर्मा प्रकाश भाषा टीका	७५)
स्त्री जातक भाषा टीका	३०)
शीघ्रबोध भाषा टीका	२०)
शिव स्वरोदय भाषा टीका	२०)
प्रभुविद्या प्रतिष्ठार्णव	२५०)
कुण्ड निर्माण स्वाहाकार पद्धति	६०)
विष्णुयाग पद्धति भाषा टीका	२००)
विवाह पद्धति भाषा टीका	२५)
उपनयन पद्धति भाषा टीका	२५)
वाशिष्ठी हवन पद्धति भाषा टीका	२५)
गणपति प्रतिष्ठा पद्धति भाषा टीका	२५)
धनिष्ठादि पञ्चक शान्ति भा०टी०	२०)
संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत कथा भा०टी०	६०)
एकादशी माहात्म्य भाषा	१५)
कार्तिक माहात्म्य भाषा टीका	५०)
हनुमद्-रहस्य भाषा टीका	६०)
गायत्री-रहस्य भाषा टीका	६०)
बृहत्-स्तोत्र रत्नाकर बड़ा	७५)
रघुवंश महाकाव्य प्रथम सर्ग	१५)
हितोपदेश मित्रलाभ भाषा टीका	२०)
किरातार्जुनीयम् १-२ सर्ग भा०टी०	१०)
सोरठी बृजाभार ९६ भाग	७५)

प्रकाशक - श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh